आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2739 • उदयपुर, शनिवार 25 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सेवा संदेश लेकर रवाना हुआ नारायण रथ

परहित भावना की नींव पर ही सुखी समाज की रचना संभव है। यह बात बुधवार को नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी मानव ने भारत भर में सेवा और सद्भावना का संदेश लेकर रवाना हुई रथयात्रा को हरी झंडी दिखाते हुए कही।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि रथयात्रा भारत भ्रमण करते हुए सेवा और संस्कारों का संदेश देने के साथ उन दिव्यांगजनों का चयन भी करेगी, जिन्हें निःशुल्क सर्जरी अथवा कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) की आवश्यकता है। इस रथयात्रा में संस्थान की विभिन्न शाखाओं को 30 साधकों का दल शामिल है।

शहजादपुर (अम्बाला) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 12 जून 2022 को माता बाला सुन्दरी प्रांगण, शहजादपुर में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता नारायण सेवा संस्थान शाखा शहजादपुर, अम्बाला रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 25, कृत्रिम अंग वितरण 21, कैलीपर वितरण 2, शेष कृत्रिम अंग 1 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में श्री अजित जी शास्त्री (शाखा अध्यक्ष) , श्री अंकुश जी गोयल (समाजसेवी) भी रहे।

श्री नरेश जी वैष्णव (टेक्निशियन) श्री अखिलेश जी अग्निहोत्री (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री गोपाल जी गोस्वामी, श्री सत्यनारायण जी (सहायक), श्री राकेश जी शर्मा (आश्रम प्रभारी) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक : 26 जून, 2022

- बजरंग आश्रम, हॉसी, हरियाणा
- रामा विष्णु सरस्वती शिशु मंदिर चांदपुर चौराहा, नहटौर, उ.प्र.

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

पू. कैलाश जी 'मानव'
'सेवक' प्रशान्त भैया

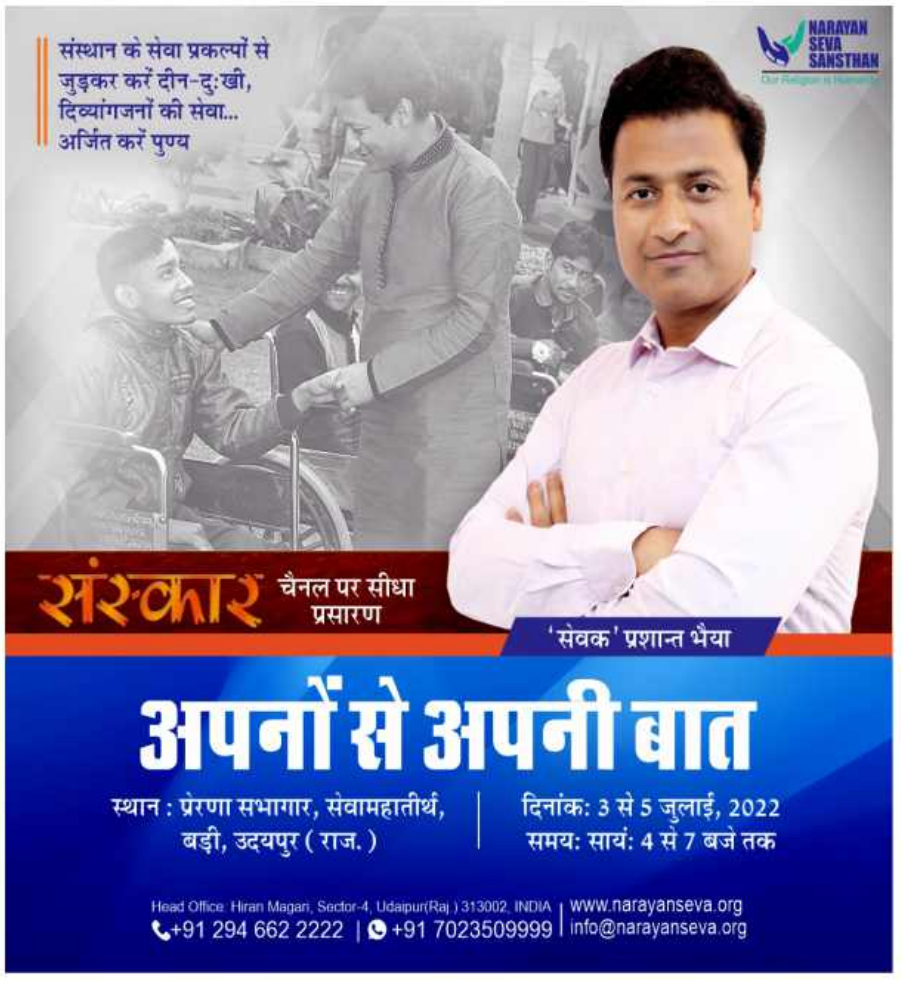

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

रोहितजी– जब मन के विचार कुभावना से ग्रस्त हो जाते हैं तो कहीं न कहीं राक्षसीं प्रवृति आ जाती है। एक सास की, एक माँ की करुण कथा आपको सुनाना चाहता हूँ। ये प्रश्न आया है मध्यप्रदेश गुना से। मगर स्थिति ये है गुरुदेव कि एक माँ दुःखी हो के कहती है कि– मैं जब अपने पोतों को प्रसाद भी देना चाहती हूँ तो बहू इस बात की आशंका करती है कि मैं जादूटोना न कर दूं। मेरे हाथ से प्रसाद लेना भी दूभर हो गया। मैं बच्चों को देकर बस आँखों से आँसू बहा सकती हूँ।

गुरुजी– हाँ, कितनी बुरी बात है। एक तरफ तो कहते हैं ना– मूल से ब्याज ज्यादा प्यारा होता है। दादी को पोता–पोती ज्यादा प्यारे होते है। और दादी नहीं होती तो बहू भी कहाँ से आती भाई ? बेटा नहीं होता तो बहू कहाँ से आती ? और बहू और बेटा नहीं होते तो पोते–पोती नहीं आते। तो बहूजी ये अच्छी बात नहीं है, मैंने तो आजकल में ही पढ़ा कि चार बहूओं ने मिलकर के अपनी सासूमाता को कंधा दिया अर्थी को। 78 साल की उम्र में एक सासूमाताजी का स्वर्गवास हुआ उनका तो चारों बहुओं ने अर्थी के चारो कोनों पे कंधा दिया। और उन्होंने कहा कि– हमारी सासूमाता ने बेटी के समान समझा और हम चारों ने भी अपनी सासूमाता को माँ समझा। हमारी दो माँ, एक माँ जिन्होंने जन्म दिया और एक माँ जिन्होंने हमारे पतिदेव को जन्म दिया। और हमारे सासूमाताजी ये तो मोटी वात है कि या कथा अरण्यकाण्ड रो मतलब –

फिर भी है इतना कहना,
मुनियों के समीप रहना।

और किष्किंधाकाण्ड का जब भाव लावे तो ये लावे कि हमे बाली जैसा नहीं बनना चाहिये। हमें हनुमानजी जैसा बनना चाहिये। जो एकादश रूद्र के अवतार थे। और किष्किंधाकाण्ड में ही हनुमानजी और भगवान राम का मिलन हुआ।

हादसों से लाचार जिंदगी फिर चल पड़ी

सूरत – रोटरी क्लब ऑफ सूरत (गुजरात) ईस्ट के सहयोग एवं कला मंदिर ज्वेलर्स लि. के सौजन्य से दो दिवसीय निःशुल्क कृत्रिम अंग व कैलिपर वितरण शिविर 16–17 अप्रैल को श्री सौराष्ट्र पाटीदार समाजबाड़ी, वराछा में सम्पन्न हुआ। जिसमें हादसो में अपने हाथ–पैर गंवाने वाले बन्धु–बहिनों को 121 कृत्रिम अंग व पांवों में विकृतियों के कारण चलने में दिक्कत महसूस करने वाले 41 लोगों को कैलिपर वितरण किए गए। इस शिविर में 170 दिव्यांगजन का रजिस्ट्रेशन हुआ। कृत्रिम अंग व केलिपर को पहनाने का काम पीएण्डओ डॉ.नेहा जी अग्निहोत्री व टेक्नीशियन भंवरसिंह जी शेखावत ने किया। मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक श्री कांतिभाई बलर थे। अध्यक्षता कला मंदिर ज्वेलसै लि. के श्री शरद भाई शाह ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्वश्री समीर भाई बोघरा, चुन्नीभाई गजेरा, रो. संतोश जी प्रधान, दामजी भाई काकड़िया, वी.एम. खूंट, हिम्मत भाई धोलकिया, बाबू भाई नारोला, रमेश भाई बघासिया, महेश भाई खैनी, डॉ. निकुंज विठलानी, जयंती भई सांवलिया, कीर्ति भाई खैली, मनहर भाई बोरा, व चिंतन भाई पटेल मौजूद थे। शिविर प्रभारी मुकेश जी शर्मा ने अतिथियों का स्वागत–सम्मान किया। अनिल जी पालीवाल, कपिल जी व्यास, हरीश जी रावत, देवीलाल जी मीणा ने व्यवस्था में सहयोग किया।

कोलायत –पंचायत समिति, कोलायत (बीकानेर) परिसर में 17 अप्रेल को पंचायत समिति प्रधान श्रीमती पुष्पा जी सेठिया के सहयोग से सम्पन्न शिविर में 24 दिव्यांगजन के कृत्रिम अंग व 32 के कैलिपर बनाने के लिए टेक्नीशियन श्री नाथूसिंह जी शेखावत ने माप लिया। जबकि अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ. नवीन जी ने दिव्यांगजन की जांच कर उनमें से 55 का दिव्यांगता सुधारात्मकता सर्जरी के लिए चयन किया। शिविर में कुल 253 दिव्यांगजन पंजीकृत किये गए। मुख्य अतिथि राज्य के ऊर्जा मंत्री श्री भंवरसिंह जी भाटी थे। अध्यक्षता उपखंड अधिकारी प्रदीप कुमार जी चाहर ने की। विशिष्ट अतिथि सर्वश्री भंवरलाल जी सेठिया, पुष्पा जी सेठिया, हरिसिंह जी शेखावत व दिनेश सिंह जी भाटी थे। प्रभारी लालसिंह जी भाटी ने अतिथियों का स्वागत किया। व्यवस्था में डॉ.रविन्द्र सिंह जी, बहादुरसिंह जी व मुकेश जी त्रिपाठी ने सहयोग किया।

धामणगांव – अमरावती (महाराष्ट्र) जिले धामण में 18–19 जांच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर सम्पन्न हुआ। टीएमसी सभागार में आयोजित शिविर में कुल 211 दिव्यांगजन का रजिस्ट्रेशन हुआ। पीएण्ड नेहांश मेहता व टेक्नीशियन किशन सुथार ने 86 दिव्यांगजन के कृत्रिम अंग व 29 के कैलिपर बनाने का माप लिया। आर्दश फाउण्डेशन, महाराष्ट्र रेल्वे राज्य दिव्यांग बेरोजगार संघटना तथा हात फाउंडेशन, धामणगांव के सहयोग से आयोजित शिविर के मुख्य अतिथि स्वाभिमानी क्षेत्रीय संघटना के अध्यक्ष श्री चेतन परडखे थे। अध्यक्षता श्री विजय जी अग्रवाल ने की। विशिष्ट अतिथि सर्वश्री प्रशांत जी झाड़े, दिनेश जी वाघमारे, सुजित जी भुजभुजे व राजेश कुमार थे। फिजियो अस्थिरोग विशेशज्ञ सुश्री माहेश्वरी ने निःशुल्क ऑपरेशन के लिए 6 दिव्यांगजन का चयन किया। अतिथियों का स्वागत व शिविर का संचालन मुकेश जी ने किया। सहयोग सत्यनारायण जी मीणा व गोपाल गोस्वामी ने किया।

झांसी – महाराज अग्रसेन इन्टर कॉलेज झांसी (उत्तरप्रदेश) में 24 अप्रेल को श्री संजीव जी बुधोलिया एवं श्रीराम कथा आयोजन समिति के सहयोग से कृत्रिम अंग वितरण शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें हादसों में हाथ–पैर खोने वाले 32 दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग व 26 को उनके माप के मुताबिक कैलिपर प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि क्षेत्रीय सांसद श्री अनुराग जी शर्मा थे। अध्यक्षता जिला पंचायत अध्यक्ष श्री पवन जी गौतम ने की। विशिष्ट अतिथि सर्वश्री संजीव की बुधोलिया अध्यक्ष, श्रीराम कृपा सेवा समिति, रामतीर्थ सिंहल, महापौर विद्या प्रकाश जी दुबे व लक्ष्मीकांत जी प्रधानाचार्य थे। शिविर प्रभारी मुकेश जी शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सम्पादकीय

भक्ति के अनेक रूप है और अनेक विधि से इसे संपन्न किया जा सकता है। इन सबमें एक प्रमुख भक्ति है– राष्ट्रभक्ति। जैसे धर्म के लिए शरीर आवश्यक है वैसे ही जीवन के लिये राष्ट्र की महत्ता है। राष्ट्र जितना उन्नत और समृद्ध रहेगा उतना ही नागरिक जीवन भी श्रेष्ठ होगा। भारत हमारा राष्ट्र जो कभी विश्वगुरू के नाम से प्रतिष्ठित था, वर्तमान मे यह स्थान यद्यपि नहीं है किन्तु हम सभी ठान लें तो यह मुश्किल भी नहीं है। यह विश्वगुरु होना हमारी आकांक्षा या अपेक्षा नहीं है वरन् विश्व शांति के लिए भारतीय विचारों का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर होने की आवश्यकता है। जब हम यह सोचते हैं और आशा रखते हैं तो हमारे कर्तव्य अधिक सजगतापूर्वक और विचार अधिक राष्ट्रभक्तिपूर्वक होने भी आवश्यक हैं। यह मेरा देश है, इसका उत्थान ही मेरी प्रगति है, इसका रक्षण ही मेरी सुरक्षा है, यह भाव जन–जन में आते ही राष्ट्र सुदृढ़ हो जाता है। जरूरी नहीं है कि सब सीमा पर जा सकें। हम जो भी कार्य करते हैं उसे भारतीय संस्तिक व राष्ट्रीय सोच के साथ करें यह भी देशभक्ति ही है। देशभक्त को अन्य किसी भी प्रकार की भक्ति की ज्यादा आवश्यकता हो न हो, पर देशभक्ति तो सबके लिए आवश्यक ही है।

कुछ काव्यमय

देश ने हमें कुछ दिया,
और हमने उसे लौटाया।
यह तो बराबरी हो गई,
फिर क्या दिया, क्या पाया ?
हम कुर्बान करें अपने को,
तो भी देश हेतु कम है।
हमारा सबकुछ अर्पण हो,
तभी देश चमके हरदम है।

अपनों से अपनी बात

सेवा महायज्ञ में आहुति

परमार्थ की भावना जब उत्पन्न होती है, तो अपना सब कुछ देने को तत्पर हो जाती है। जीवन साथी का सहयोग मिलने पर यह और भी स्तुत्य हो जाती है। माघ विद्वान कवि थे एवं प्रतिभावान भी। अपनी अद्भुत काव्य शक्ति के बल पर उन्होंने कमाया भी बहुत। इतने पर भी वे कभी सम्पन्न न बन सके। जो हाथ आया वह अभावग्रस्तों, दुःखी–दरिद्रों की सहायता के लिए बिखेर दिया।

एक बार उस क्षेत्र में दुर्भिक्ष पड़ा। कवि ने अपनी सम्पदा बेचकर वहां के दीन–दरिद्रों की अन्नपूर्ति के लिए लगा दिया। मात्र उनका नवरचित काव्य घर में शेष रह गया था। सोचने

लगे इसके बदले कुछ पैसा मिला जाये तो उसे भी समय की आवश्यकता पूरी करने के लिए लगा दिया जाय। माघ और उनकी धर्म पत्नी लम्बी पैदल यात्रा करके राजा भोज के दरबार में पहुँचे। एक अपरिचित महिला द्वारा काव्य, बेचने की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया। काव्य के कुछ पृष्ठ उलटते ही राजा दंग रह गया। उन्होंने मुक्त हस्त से उसका पुरस्कार दिया। जो मिला उसे लेकर मार्ग में फिर वही दुर्भिक्षग्रस्त क्षेत्र मिले, वहीं से बांटना चालू किया।

आपका यह संस्थान दुर्भिक्ष रूपी पोलियो विकलांगों के लिए जो कर रहा है, वह है– समुद्र में बूंद के समान। इस भगवत कार्य में आपश्री की धनरूपी लक्ष्मी द्वारा आहुति की वैसे ही आवश्यकता है– जैसे दुर्भिक्षग्रस्त क्षेत्र में अन्न की। संस्थान के कई दानदाता इस महायज्ञ में सुदूर रहते हुए भी अपनी आहुतियाँ दे रहे हैं –पुण्य का संग्रह कर रहे हैं –यदि आपश्री अभी तक नहीं जुड़ पाये है किसी कारण से तो अभी जुड़ जाइये –अन्तःकरण में उठे विचारों को दबाइये मत। दीजिये –सेवा में अपना सहयोग। **–कैलाश 'मानव'**

शब्दों का महत्व

अपेक्षाएं दुःखों को जन्म देती हैं। हम परिवार के सदस्यों के साथ अधिक मोह एवं आसक्ति रखते हैं, यही मोह व आसक्ति मनुष्य के दुःख का कारण बनती है। मोह में बंधकर व्यक्ति अपने कर्तव्यों को भूल जाता है। कर्तव्यों को भूलना नुकसानदायक होने के साथ–साथ कष्टकारक भी होता है।

जिह्वा ही शरीर का सबसे ज्यादा अच्छा और सबसे खराब भाग है। यही शत्रुता और यही मित्रता लाती है। अधिकतर लड़ाई–झगड़े आपसी मतभेद की वजह से कम, लेकिन जिह्वा के अनुचित प्रयोग की वजह से ज्यादा होते हैं।

एक बार की बात है, एक राजा अपने सैनिकों और मंत्रियों के साथ किसी स्थान पर भ्रमण कर रहे थे। अचानक राजा को प्यास लगी और उन्होंने अपने सैनिक से पानी लाने को कहा। सैनिक पानी की तालाब में इधर–उधर गया। थोड़ी देर बाद उसे दूर कहीं एक अंधा व्यक्ति पानी

के मटके के साथ बैठा मिला। सैनिक उसके पास गया और बोला, "ऐ अंधे! महाराज को प्यास लगी है, पानी दे।"

सैनिक की बात सुनकर अंधे ने सैनिक से कहा, "जाओ, मैं तुम्हें पानी नहीं दूँगा, तुम सैनिक हो, सैनिक ही रहोगे।" सैनिक ने यह बात राजा को बताई। राजा ने अपने मंत्री को अंधे के पास पानी लाने भेजा। मंत्री ने अंधे से कहा, "ओ अंधे महाशय, राजा हेतु पानी दीजिए।" मंत्री की बात सुनकर अंधे ने मंत्री से कहा, "हे मंत्री! तुम कुटिल व्यक्ति हो और मैं कुटिल व्यक्तियों को पानी नहीं देता।" मंत्री ने सारा वृतान्त राजा को कह सुनाया। इस बार राजा स्वयं उस व्यक्ति के पास गए और कहा, "हे महात्मन्! मुझे प्यास लगी है और मैं आपसे पानी की याचना करता हूँ।" अंधे व्यक्ति ने सहर्ष राजा को पानी दिया। पानी पीने के पश्चात् राजा ने उससे पूछा, "हे सज्जन पुरुष! यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि आप देख नहीं सकते तथापि आपने सैनिक, मंत्री और मुझे पहचान लिया कि कौन क्या है? आपने उन दोनों को पानी देने से मना कर दिया और आपने मुझे आदरपूर्वक पानी पिलाया।"

राजा की बात सुनकर उस व्यक्ति ने सम्मानपूर्वक कहा, "हे राजन् उनके द्वारा प्रयोग किए गए शब्दों के आधार पर ही मैं पहचान पाया कि कौन क्या है? निम्न स्तर के शब्दों का प्रयोग निम्न प्राणी ही करता है और सम्मानीय शब्दों का प्रयोग कुलीन व्यक्ति करता है।

पानी देने या न देने के पीछे कारण भी, शब्दों का प्रयोग ही है।" शब्दों के द्वारा ही आपकी पहचान होती है। शब्दों में स्नेह और विनम्रता सुनने वाले शत्रु को भी मित्र बना देते हैं तथा शब्दों की कड़वाहट और निष्टता परिवार के सदस्यों को भी शत्रु बना देती है। अतः शब्दों में क्रोध कभी भी नहीं लाएँ।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

चैनराज के स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार होता रहा, इस बीच उदयपुर के शक्तिपीठ मंदिर में अखण्ड जाप जारी रहा, कैलाश भी प्रतिदिन चन्द्रप्रभु मन्दिर में जाकर आराधना करता। यह ईश वन्दना का चमत्कार था या कुछ और, कुछ कह नहीं सकते। मगर तीसरे दिन तो चैनराज अपने बिस्तर से उठ खड़े हुए। डॉक्टर भी उनकी स्थिति देखकर हैरान थे, जिस व्यक्ति के घन्टे–दो घन्टे भी जीने की आस नहीं थी उसके इस तरह स्वस्थ्य हो जाने को वे एक अजूबा ही बता रहे थे। चैनराज स्वस्थ्य होकर अपने घर लौट आये फिर भी शरीर में कमजोरी तो थी ही। डॉक्टरों ने उन्हें पूर्ण विश्राम की सलाह दी थी। चैनराज की बीमारी और उनके अशक्त हो जाने का असर उनके व्यापार पर भी पड़ा। आय कम होने लगी तो उन्हें चिन्ता हो गई। उन्होंने कैलाश से कहा कि अस्पताल तो लगभग बन गया है मगर इसे चलायेंगे कैसे? इसके लिये भी तो पैसों की आवश्यकता होगी? मेरी आर्थिक स्थिति दिनों दिन कमजोर होती जा रही है। कैलाश भी उनकी बात सुन विचारमग्न हो उठा मगर निराश नहीं हुआ। जीवन में इतने उतार–चढ़ाव, पग पग पर बाधाएं और उन पर पार पाने का उसे इतना अनुभव था कि वह आश्वस्त था कि कुछ न कुछ तो हो ही जायेगा। हर चीज का भाग्य होता है, यह अस्पताल इतना बन गया है तो हमारे प्रयासों के साथ इसका भाग्य भी कुछ न कुछ कर दिखायेगा। उसने प्रकट रूप में चैनराज से कहा कि आप चिन्ता न करें, कुछ न कुछ हो ही जायगा। कैलाश के मन में अब एक योजना जन्म लेने लगी। एक मुट्ठी आटा जैसी योजना की सफलता उसके सामने थी। वह सोचने लगा कि क्यूं नहीं जगह–जगह ऐसे दान पात्र रख दिये जांये जिसमें लोग एक रु. रोज दान कर दें। जिस तरह एक मुट्ठी आटे से किसी को फर्क नहीं पड़ा एक रुपये से भी किसी के कोई आंच आने वाला नहीं। यदि ऐसे दस हजार पात्र पूरे उदयपुर में रखवा दें और इतने ही लोगों से इसे जोड़ दें तो रोज के दस हजार रु. एकत्र हो सकते हैं। इसी तरह दस हजार पात्र देश भर में अन्यत्र रखवा दिये जांये तो दस हजार रु. उनसे भी एकत्र हो सकते है अर्थात् रोज के 20 हजार रु. अस्पताल चलाने के लिये इतने रुपये तो बहुत होंगे।

अंश - 136

गरमी में अपनाएं ये उपाय

गर्मी में बच्चों का विशेश ध्यान रखने की जरूरत होती है। उनमें डिहाइड्रेशन की दिक्कत अधिक होती है। क्योंकि बच्चों के शरीर से जितना तरल निकलता है, वे उससे कम ही पानी पीते हैं। अपच होने से डायरिया होने की आशंका बढ़ जाती है। जानते हैं, कैसे बच्चों को हाइड्रेट रखें–

डिहाइड्रेशन के लक्षण :

बच्चे की आंखें अंदर धंसना, होठों और जीभ का सूखना, पेशाब का कम या पीला आना।

जब पानी की कमी होती है, शुरू में तो प्यास ज्यादा लगती है, लेकिन जब गर्मी बढ़ जाती है तो प्यास ज्यादा लगना कम हो जाता है और बच्चा सुस्त पड़ जाता है।

इनका रखें ध्यान

जब भी बच्चा घर से बाहर निकले, पानी पिलाकर ही भेजें। साथ में पानी की बोतल भी जरूर दें।

धूप में निकले तो सिर पर कपड़ा रखें, चेहरे को भी कवर करें।

स्कूल बस में जा रहे है तो खिड़की न खोलें, क्योंकि गर्म हवा डिहाइड्रेशन बढ़ाती है।

सुबह दस से चार बजे तक बच्चे घर से बाहर न निकलें।

ऐसे करें उपाय

ठंडक वाले स्थान पर रहें।

बच्चों को शिकंजी, नींबू या नारियल पानी दें। पानी में नमक–चीनी मिलाकर दें।

रस वाले मौसमी फल–सब्जियां अधिक खिलाएं।

कैरी का पानी पी सकते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

सिविल सेवा में सफल हुए चिराग का सम्मान

भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) की परीक्षा में 312वीं रेंक हासिल करने वाले उदयपुर के चिराग जी मेनारिया का नारायण सेवा संस्थान ने उपरणा एवं पगड़ी पहनाकर सम्मान किया। इस दौरान पिता दिलीप जी मेनारिया एवं माता गिरिजा जी मेनारिया का भी अभिनंदन किया गया। संस्थान की ओर से विष्णु जी शर्मा हितैषी, दीपक जी मेनारिया एवं भगवान प्रसाद जी गौड़ मौजूद रहे।

अनुभव अमृतम्

हाँ, तो शुभकामना परिवार, और आज शुभ दिनाक 22 मई 2020 तारीख शुभ है– महाराज। कोई अमावस अशुभ नहीं है। कोई काल की राशि अशुभ नहीं, सभी राशियाँ शुभ ही है। फिर भी चौघड़िया– दुगड़िया, इनका मान–सम्मान करते ही हैं। करना ही चाहिये। कई बार ये देखा है कि नियति कराना चाहती है, वो करा के रहती है। भले ही खराब ही करना चाहो, या अच्छे भी करना चाहो। अच्छा ही हुआ नारायण सेवा में तो। मेरे जीवन काल में सब अच्छा हुआ– महाराज। ये कैम्प, ये शिक्षा, चिकित्सा, सहायता शिविर। हाँ, जिसके लिये घासीरामजी भाईसाहब ने कितना–कितना लिखा– सेवा री गाड़ी में भाया, बलद वणी ने जूतो रे। हाँ, कहना तो सरल है। बलद वे वीके नाक में, दो रस्सियाँ डाल दी दी। एक नाक ऊं, दूसरी नाकऊं निकल रही रस्सियाँ। जो बैलगाड़ी वाला रस्सी को खींचता है– रूकने के लिये। कितनी चुभन होती है? नाक में कैसी चुभन होती है, सोच सकते हैं – आप? जोर से खींचता है, कभी बिना वजह से खींचता है, कभी ढीला छोड़ता है। कभी कोड़े मारता है, कभी चाबुक मारता है, कभी उसकी पूंछ मरोड़ता है। संत ज्ञानेश्वरजी महाराज को इसी पीड़ा का अनुभव हुआ था। जो कलकत्ता में भैंसागाड़ी, बहुत– बहुत भैंसों के मुँह में झाग। अब गिरा, अब गिरा स्थिति। और वो भैंसागाड़ी वाला उसको मारता भी जा रहा था। ज्ञानेश्वरजी ने यही कहा था– ना। संत ज्ञानेश्वरजी जी कहानी को पढ़ना बहुत सरल। इधर भैंसागाड़ी पर गाड़ीवाले दुष्ट ने कोड़ा लगाया, चाबुक लगाया– भैंसे के, और ज्ञानेश्वरजी की कमर पर चुभ गया। कमर पर चाबूक मंड गया। लाल–लाल हो गया, खून आने जैसा हो गया। और संत ज्ञानेश्वरजी मूर्छित होकर गिर पड़े, कैलाशचन्द्र। तेने कहाँ पीड़ाएं भोगी है? बाबूड़ा। अरे! महाराज, एक सन्डे ही मिलता है, और सन्डे को ही आदिवासी क्षेत्र में जा रहे हैं, जा रहे हैं, तो जा रहे हैं। हाँ, महाराज रामानंद सागरजी की रामायणजी उन्हीं दिनों में दूरदर्शन पर चलने लगी थी। कहते है कि, लोग उस समय सन्डे को अपनी दुकान भी नहीं खोलते थे, पहले रामायण देखेंगे। टी.वी. के आगे आकर बैठ जाते थे। हमें तो रामायण सुनने का अवसर ही नहीं मिला था– भैया। उन्हीं दिनों में 85 से लेकर के निरन्तर– निरन्तर दौड़ते रहे। परन्तु संत ज्ञानेश्वरजी ने जो पीड़ा पाई वैसी, उसका लैशमात्र भी नहीं पाया।

औरो के हित जो हंसता है,
औरो के हित जो रोता है।
उसका हर आँसू रामायण,
प्रत्येक कर्म ही गीता है।।

प्रत्येक कर्म गीताजी का अठारह अध्याय के हर एक के बीच के श्लोक। कर्म विभिन्न प्रकार के सात्विक, राजसिक और तामसिक। तीन प्रकार का सुख, दो प्रकार का प्रमाद। बहुत अच्छा रहा, कैलाशचन्द्र अग्रवाल तूं दौड़ता रहा, बहुत अच्छा रहा। अपने भाग्य की सराहना कर।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 489 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023